Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

महात्मा गांधी विचार माला और वर्तमान समाज

कुशकुल दीप[9]

भारतीय धरा पर जितने भी सपूतों का जन्म हुआ, उनमें कोई भी व्यक्ति किसी भी युग में इतने व्यापक प्रभाव का नहीं देखा गया जितने व्यापक मोहन दास करमचन्द गांधी रहे हैं। 20वीं सदी में गांधी जैसा दूसरा कोई व्यक्ति नहीं हुआ। आप चिन्तन और व्यवहार, के हर क्षेत्र में धनी थे । वे भले ही भारत में पैदा हुए हो लेकिन वह विश्व राजनीति के वर्तमान इतिहास में एक मात्र ऐसे व्यक्ति है जिन्हें सही अर्थों में विश्व नागरीक कहा जा सकता है। वैश्वीकरण एवं भूमण्डलीकरण के इस निरे भौतिकवादी युग में जहां अर्थोपार्जन एवं भौतिक विकास ही एकमात्र ध्येय बनकर रह गया है, जब हम शान्तिपूर्ण सहअस्तित्ववादी विश्व व्यवस्था की कल्पना करते है तो हाड़–मांस के गठरी मात्र लाठी के सहारे चलने वाले उस अर्धनग्न फकीर, महात्मा गांधी उसमें मशाल की तरह प्रज्ज्वलित एवं दीप्तमान दिखायी पड़ते है। यहां गांधी जी के व्यवहार एवं विचार को आलोचना से परे नहीं माना गया है, तथापि गांधी जी के शारीरिक अवसान के 60 वर्षो के उपरान्त भी जब हम विश्व शान्ति एवं सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के रास्ते खोजते है, तो हमें सिर्फ वही रास्ते दिखायी पड़ते है जो गांधी जी एवं उनके विचारों ने हमें दिखाये थे। जब हम भारत देश में गत दिनों हुए कुछ आन्दोलनों पर नजर डाले तो पाते है कि वे काफी हद तक गांधीवादी विचानधारा एवं आचरण से पोषित, पुष्पित एवं पल्लवित है। अपनी माँग को सरकार या गैर सरकारी संगठन के सामने रखने का अहिंसक एवं शांतिपूर्ण प्रदर्शन, विरोध प्रदर्शित करने के लिए पुष्प एवं उपहार भेंट करना, सत्याग्रह, अनशन आदि ऐसे हथियार हैं जिनका प्रयोग गांधीवादी विचारों की अमूल्य भेंट है। चूंकि गांधी जी मानते थे कि इन प्रयासों से एक ऐसी स्थिति आयेगी जब सामने बैठे आधिकारी का हृदय परिवर्तन निश्चित होगा। जिस ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था उससे लोहा लेने वाला एक गुलाम देश का नेता और उनके विचार सदी के अन्त तक आते–आते विश्व का सर्वोच्च शिखर पुरूष बन गये। यह भारत के लिए गर्व की बात है। द्वन्दों और तनाव से जूझ रही मानवता निढार स्थिति में विश्वशांति एवं सद्भाव की स्थापना के लिए गांधीवाद की ओर निहार रही है। इस महान् सपूत को 20वीं सदी का महान् व्यक्ति घोषित किया जाना, इनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा ''विश्व शांति दिवस''

[9] शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

के रूप में मनाए जाने का निर्णय गांधीजी के विचारधारा एवं उस कर्मयोगी की कार्य पद्धति को एक सच्ची श्रद्धांजली है।

गांधी जी कोई विचारक या दार्शनिक नहीं थे जिन्होंने अपना जीवन दर्शन अध्ययनागार के एकान्त में बैठकर तैयार किया हो उन्होंने अन्य राजनीतिक दार्शनिकों की भांति किसी सुसम्बद्ध दर्शन या विचारधारा का निर्माण नहीं किया, उनके समस्त सामाजिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक विचारों का प्रादुर्भाव सामाजिक धरातल पर कर्तव्य पालन करते हुए सामाजिक राष्ट्रीय आन्दोलन की छत्र–छाया में हुआ, जिनको किसी सुनियोजित कार्यक्रम के अनुरूप नहीं चलाया गया बल्कि सामाजिक व्यवस्था की स्थापना, मानवता को जीवित रखने के लिए विश्व शांति की परिसिमा में कुशासन के विरूद्ध सुशासन के लिए, समय की मांग पर मानवीय प्रयासों के प्रतिफल के रूप में कर्म योग के बल पर गांधीवादी विचार एवं दर्शन के रूप परिलक्षित हुआ। इस प्रकार ये विचार कर्मयोगी की कर्मयात्रा के विविध पड़ाव माने जा सकते है इसलिए जिसे हम गांधीवाद कहकर पुकारतें है उसे किसी सुनियोजित वाद, मत, दर्शन या सिद्धान्त की संज्ञा नहीं दी जा सकती तथापि इसे हम गांधी के विचारों एवं कार्य पद्धति को क्रमबद्ध करने वाली विचार–माला आवश्य कह सकते है।

अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रिका में नेल्सन मंडेला और पाकिस्तान में खान अब्दूल गफ्फार आदि नेताओं और राजनेताओं ने सामाजिक कार्यकत्ताओं ने सत्याग्रह और असहयोग का रास्ता अपनाकर गांधीवाद की सार्वभौमिकता और सार्थकता के लिए अमन और शांति के दीप्तपुंज को जलाये रखा है। यूरोपीय संघ की संसद ने विश्व में मानव अधिकारों की स्थिति पर जारी अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि उसकी नजर में ''आधारभूत मानव अधिकारों के सम्मान, पालन और प्रोत्साहन के लिए गांधीवादी अहिंसा का रास्ता सबसे अधिक उपयुक्त है।'' अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा अनेक अवसरों पर महात्मा गांधी को याद कर चुके हें। सच तो यह है कि भारतीय जनजीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिस पर उन्होंने अपनी ठोस राय हमारे सामने न रखी हो। लोकतंत्र से लेकर ग्राम स्वराज, ब्रह्मचर्य से लेकर स्त्री सशक्तीकरण और नशाबंदी से लेकर शिक्षा जैसे हर पहलू पर गांधी जी ने गहन चिंतन किया और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए।

गांधी विचार माला का सबसे बड़ा एवं प्रमुख तथ्य है 'अहिंसा'। अहिंसा की पराकाष्ठा को प्राप्त महात्मा गांधी जी अपने व देश के दुश्मन के प्रति भी हिंसा के प्रयोग की वर्जना करते है। गांधी जी के अनुसार 'हिंसा कायरता की पराकाष्ठा है' अतः उनकी मान्यता थी कि ''अहिंसा मेरा धर्म और सत्य मेरा ईश्वर है'' हिंसा का विरोध एवं रोकथाम उनके चिंतन में इतनी गहरी पैठ बना चुका था कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान चौरी–चौरा में साम्प्रदायिक हिंसा होने पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन तक को स्थगित कर दिया। आज सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख शान्ति की स्थापना का यक्ष प्रश्न विकराल रूप धारण कर खड़ा है, विश्व का प्रत्येक देश चिन्तित है ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी जी द्वारा बताये शान्ति के संदेश के रास्ते के तरफ सबका ध्यान आकृष्ट हुआ है। आज विभिन्न समाजों द्वारा अपने प्रभुत्व की

स्थापना की महत्वाकांक्षा के प्रतिफल के रूप में घृणा–द्वेष, हिंसक प्रतिरोध एक भयानक वातावरण का निर्माण करते है। इसीलिए गांधी कहते है 'हिंसा से हिंसा का जन्म होता है' अतः हिंसा किसी भी रूप में अच्छी नहीं मानी जा सकती है। गांधीयन विचार की महत्ता के संदर्भ में ज्यॉ पाल सार्त्र ने एक बार कहा था–''यदि विश्व में रक्त की एक बूंद बहाए बिना कुछ होने का सपना किसी दर्शन में है तो वह है महात्मा गांधी के दर्शन में।''

गांधी जी के विचार 'सर्व धर्म सम्भाव एवं धर्म निरपेक्षता' की मिशाल पेश करते हैं। हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रति महात्मा गांधी के निष्ठा की गहरायी का अनुमान इस ऐतिहासिक तथ्य से लगाया जा सकता है कि जिस स्वतंत्र भारत के लिए उन्होंने अपना तन–मन समर्पित कर दिया था उसकी प्राप्ति के उपरान्त जब सारा राष्ट्र आजादी की खुशियां मना रहा था उसी वक्त गांधी जी 'नोआखाली' के दंगों की आग में झुलसे लोगों की सेवा में जुटे थे। महात्मा गांधी स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति थे, किन्तु वे दूसरे धर्मो का पूरा सम्मान करते थे। गांधी जी जहाँ सादा जीवन उच्च विचार की वैचारिकी को मानने वाले थे वहीं वर्तमान समाज इस वैचारिकी के विपरित दिखायी पड़ता है जहाँ विचारों की श्रेष्ठता समाप्त हो चली है, वैभव्यता का प्रदर्शन ही उच्चता और निम्नता का निर्धारक बन गया है। वैश्वीकरण ने इस हालात में और अधिक गतिरोध उत्पन्न कर दिया है। जिस धर्म निरपेक्षता की स्थापना के लिए गांधी जी सम्पूर्ण जीवन प्रयासरत रहे वहीं धर्म निरपेक्षता आज राजनीतिक हथियार के तौर पर राजनीतिज्ञों द्वारा उपयोग की जा रही है। गांधी दर्शन के स्थापक सिद्धान्त 'सत्य और अहिंसा' को आज केवल मौखिक समर्थन प्राप्त है इसकी व्यक्ति के व्यवहार में परिणति नहीं हो पा रही है।

गांधी जी की धर्म भावना का सार 'सर्वोच्च जीवन मूल्य' था। 'गीता' तो उनका सदैव मागदर्शन करती रही। उनकी धर्मनिष्ठता ने उन्हें कर्म योगी बना दिया, गांधी जी का विचार था कि त्याग संसार से पलायन नहीं और न मोक्ष मृत्यु के बाद की स्थिति है। सच्चा त्याग तो अनाशक्त कर्म योग एवं सच्चा मोक्ष वस्तुतः अपने तुच्छ स्वार्थ और कलुषित योग मनोवेंगों से ही मनुष्य की मुक्ति है। उन्होंने धर्म की व्याख्या करते हुए उद्‌गार व्यक्त किया कि–'धर्म से मेरा तात्पर्य औपचारिक या रूढ़िगत धर्म से नहीं वरन् उस धर्म से है जो सब धर्मो की बुनियाद है और जो उसमें अपने सृजनहार का साक्षात्कार कराता है।' गांधी जी की मान्यता थी कि मनुष्य धर्म के बगैर नहीं जीवित रह सकता। धर्म एक वैयक्तिक साधना है। गांधी जी ने 'हरिजन' 28 दिसम्बर 1936 में लिखा है ''धर्म एक अत्यन्त वैयक्तिक वस्तु है। हमें दुसरों के जीवन की श्रेष्ठ बातों को अधिकाधिक लाभ लेते हुए अपने आदर्शों के अनुसार जीवन–यापन करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार हम ईश्वर प्राप्ति की आध्यात्मिक साधना को भी समृद्ध करेंगे।'' इन आदर्शो विचारों को वर्तमान समाज ने भुलाकर धर्म को केवल कर्मकाण्ड और स्वार्थ सिद्धि की तंत्र विद्या तक सीमित कर दिया है। साथ ही आदर्श शासन के लिए ''रामराज्य की कल्पना'' भी तुच्छ राजनैतिक मानसिकता का शिकार हो गयी। गांधी जी के अनुसार

''प्रजातंत्र वह है जिसमें समाज के अत्यंत दुर्बल लोगों को वही अवसर प्राप्त हो जो बलवानों को प्राप्त है।'' बापू जनतंत्र की गरिमा के लिए अनुशासन और विवके को सर्वोपरि मानते है। उनके अनुसार अनुशासन और विवके पूर्ण जनतंत्र संसार की सबसे सुन्दर वस्तु है। आम व्यक्ति को शासन की भागीदारिता सुनिश्चित कराने का यदि कोई उच्च कोटि को अवसर है तो वह जनतंत्र द्वारा प्राप्त होता है। भारत के लिए यह गर्व की बात है कि यहाँ अनेकों दिक्कतों के बावजूद लोकतंत्र को अपनाया गया।

गांधी जी ने 18 जनवरी 1948 को 'हरिजन' में लिखा कि ''सच्चे लोकतंत्र का परिपालन केन्द्र में बैठे 20 व्यक्तियों द्वारा नहीं कराया जा सकता, इसका कार्यान्वयन गांव की जनता के द्वारा होना चाहिए क्यों भारतीय लोकतंत्र की प्राथमिक इकाई गांव है।'' क्यों कि जनता का जनता द्वारा जनता के लिए शासन ही वास्तविक अर्थों में लोकतंत्र को परिलक्षित करता है और यदि हम इस लोकतंत्र को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें गांधी जी के विचारों के अनुरूप लोकतंत्र का निर्माण जमीन से अर्थात गाँव से प्रारम्भ कर ऊपर लाना होगा। क्यों कि जब तक अन्तिम व्यक्ति तक अवसरों की समानता एवं विकास न पहुचे लोकतंत्र को प्राप्त नहीं किया जा सकता, इस वास्तविकता को अपनाकर ही गांधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा को पूर्ण किया जा सकता है। हम यह तो नहीं कह सकते है कि प्रजातंत्र अपने निचले स्तर तक पहुच पाया परन्तु हमारी सरकारों ने इस विचार पर अटूट श्रद्धा दिखायी है परिणाम स्वरूप पंचायती राज व्यवस्था के रूप में यह व्यवस्था भारत के प्रत्येक जनपद में संचालित है। राजीव गांधी ने पंचायतो को अधिकार सम्पन्न बनाने के लिए संविधान में संशोधन का भी प्रयास किया परिणामतः 1993 ई0 में संविधान के 73वें संशोधन के पश्चात् परम्परागत ग्राम पंचायतो के रूप में पूर्ण रूपेण परिवर्तन कर समाज के उपेक्षित वर्गो एवं महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित कर वास्तविक ग्राम स्वराज की संकल्पना को चरितार्थ किया गया। जिससे समाज द्वारा उपेक्षित वर्गों को भी शासन का अधिकार प्राप्त हो सका है जो कि गांधी जी के पंचायती राज की अवधारणा को सच्चे अर्थो में पुष्पित एवं पल्लवित करती है।

महात्मा गांधी का भारत गांवों में बसता है अतः ग्रामीण सशक्तिकरण द्वारा ही प्रजातंत्र के निचले स्तर को मजबूत सुदृढ़ एवं सशक्त बनाया जा सकता है। जिसमें महिलाओं का स्थान एक प्रमुख तथ्य है, उनकी समाज में निम्न स्थिति चिंतनीय है अतः गांधी जी ने भारतीय नारी के अन्दर छिपी त्याग वृत्ति को घर की चहारदीवारी से बाहर निकालकर समाज और देश के व्यापक हितों में उसका प्रयोग किया। भारतीय नारी की समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया एवं अपने अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किया। महिला सशक्तिकरण पर गांधी जी ने अत्यधिक बल दिया। क्यों कि उनका मानना था कि– सृष्टि के संचालन के लिए जितना महत्वपूर्ण पुरूष है उतनी ही महिलाएं भी है। उनके अनुसार स्त्री पुरूष की सहचरी है, उसे भी समान मानसिक योग्यता प्राप्त है कई मामलों में तो स्त्री पुरूषों से श्रेष्ठ होती है। गांधी जी के अनुसार महिला सशक्तिकरण तभी सम्भव है 'जब उन्हें, उनके कार्यो और अधिकारों का ज्ञान

होगा, उनकों प्राप्त करने की शक्ति होगी, जिसके लिए शिक्षा नितांत आवश्यक है अतः स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया जाए।

भारतीय समाज में जातीय आधार पर असमानता, आर्थिक विषमताओं की कलंकपूर्ण स्थिति से गांधी जी पूर्णरूपेण अवगत थे, अतः उन्होने इस विषमता को दूर करने, अस्पृश्यता निवारण को अपने राजनीतिक आंदोलन का अंग बनाया। गांधी जी का विश्वास था कि हम सब समान पैदा होते हैं, अतः सबको समान अवसर पाने का आधिकार है साथ ही जाति–पाति के आधार पर अस्पृश्यता को गांधी जी ने हिन्दु वर्ण व्यवस्था पर काला धब्बा और बहुत बड़ा कलंक कहा है। गांधी जी के शब्दों में ''मैंने इस वर्ण व्यवस्था और प्राकृतिक नियम को जैसा समझा और उसका जो अर्थ निकाला उससे तो यह नियम सर्वथा उपयोगी ही प्रतीत हुआ है, मनुष्य में हिन्दुनामधारी मनुष्य ने उसका रूप बिगाड़ दिया है साथ ही उसमें छूआछुत का कालारंग पोतकर उसे भी कुरूप कर दिया है।'' गांधी जी ने न केवल भाषणों और उपदेशों में बल्कि अस्पृश्य माने जाने वाले वर्ग के मध्य रहकर लोगों को प्रेरित किया। वे समानता के लिए संघर्ष के बजाय सामाजिक समरसता पर बल देते थे।

स्वदेशी की भावना से ओत–प्रोत गांधीजी ने इस भावना को स्वाधीनता आंदोलन के अभिन्न अंग के रूप में अपनाया तथा उसे जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास किया। गांधीजी की स्वदेशी भावना कोई संकीर्ण राष्ट्रवादी सोच की उत्पत्ति नही बल्कि देश के आर्थिक विकास और कुशल कारीगरों एवं श्रमिकों के रोजगार से जुड़ी थी। गांधी जी कुटिर उद्योगों के पक्षधर थे वे मनुष्य को मशीन का गुलाम नहीं बनने देना चाहते थे, अपनी इस भावना के कारण ही उन्होने स्वदेशी पर जोर देते हुए खादी और चरखा आन्दोलन चलाया साथ ही स्वदेशी के नारे को बुलंद किया, स्वनिर्मित वस्तुओं के खुद प्रयोग के साथ ही सबको इसके प्रयोग के लिए उत्तम सलाह भी दिया। मशीनों के विरोध के पीछे उनकी मान्यता थी कि इससे रोजगार के अवसरों की कमी आयेगी बेरोजगारी बढेगी साथ उपभोक्ता बाजार पर मुनाफाखोरों का नियन्त्रण स्थापित होगा। यह सही है कि आज के युग में औद्योगीकरण के बिना विकास कर पाना कठिन है, किन्तु यदि गांधी जी के विचारों पर चलकर हम छोटे कुटीर तथा ग्रामीण उद्योगों के विकास पर अधिक ध्यान देते तो बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, शोषण और उपभोक्तावाद जैसी समस्या इतना विकराल रूप नहीं ले पाती। प्रकृति के साथ सामंजस्य की गांधीवादी सोच को अपनाकर हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने के साथ–साथ नक्सलवाद जैसी समस्या से भी बच पाते।

गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता और विश्व में भारत के सम्मान से जुड़े राष्ट्रभाषा के पहलू पर भी समुचित ध्यान दिया। गांधी जी को अपनी मातृभाषा गुजराती से अपार स्नेह था अतः वे ज्यादातर उसी भाषा का प्रयोग करते थे। साथ ही देश के विभिन्न भागों मे भारतीया जनता को सम्बोधित करने के लिए सबसे अधिक देशवासियों द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी का प्रयोग करते थे। वे हिन्दी को देश की सम्पर्क भाषा एवं राष्ट्रभाषा मानते थे। उनकी प्रेरणा से

हिन्दी का प्रश्न स्वतंत्रता आन्दोलन का अंग बना और अनेक नेताओं ने हिन्दी प्रसार को अपना जीवन लक्ष्य बना लिया। उनके नेतृत्व में बने वातावरण के कारण ही हिन्दी को संविधान सभा द्वारा बिना किसी विरोध के राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। उन्होंने कई बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की और विभिन्न राज्यों विशेषकर दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचारिणी सभाओं की स्थापना में सहयोग दिया। परन्तु अफसोस हिन्दी को 15 वर्षों में पूर्णरूपेण राजभाषा बनाने के संविधान सभा के संकल्प को पूरा नहीं कर पाये। परन्तु आम स्थिति में परिवर्तन परिलक्षित है, न्यूयार्क में हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी को राष्ट्र की भाषा बनाने का प्रस्ताव पारित हुआ, हिन्दी सिनेमा एंव दूरसंचार साधनों संयंत्रों ने हिन्दी को देशवाणी बना दिया है, आज विदेशी विद्यार्थी भी हिन्दी अध्ययन पर जोर दे रहे हैं। दक्षिण राज्यों में हिन्दी सीखने की होड़ लग गई है जो राजनीतिक दल हिन्दी विरोधी थे उनके नेता भी हिंदी बोलने और सीखने का प्रशिक्षण ले रहे है। अतः प्रतीत होता है कि हिंदी को व्यावहारिक स्तर पर देश की अखिल भारतीय भाषा बनाने का गांधी जी का सपना साकार होने जा रहा है।

गांधी जी उनका चिंतन और कर्म केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ है। बापू 'अहिंसा' को असीमित शक्ति का भण्डार मानते थे। आपका मानना था कि अहिंसा पूर्वक सत्य का आचरण करके आप संसार को अपने चरणों में झुका सकते है। वर्तमान समाज विशेषकर युवा में गांधी के विचारों के प्रति झुकाव नजर आ रहा है, गांधी के विचारो को जानने की पिपासा ने दुनिया भर को अपनी ओर खींचा है। परन्तु गांधी का अर्थ क्या है? गांधी किसी सोच को कहते है या किसी इंसान का नाम है, गांधी यानी नैतिकता, गांधी यानी साधना, जनसेवा, रचनात्मक कार्य पद्धति या फिर अहिंसा, धर्म, कर्तव्य परायणता, अव्यवस्था के प्रति असहयोग यह सब एक सोच है जो वर्तमान सामाजिक दशाओं को बदलने की प्रवृत्ति रखती है अतः कहा जा सकता है कि गांधी जी के विचारों की माला किसी दर्शन से ऊपर एक क्रियाविधि, कार्यपद्धति, एक समाज है। राष्ट्र कवि दिनकर जी ने ठीक ही कहा है–

गांधी की लो शरण बदल डालों मिल के संसार,
या फिर रहों कल्कि के हाथों से मिटने को तैयार।
पहुँच गयी है घड़ी फैसला अब करना ही होगा,
दो में किसी राह पर पगले पग धरना ही होगा।।

सन्दर्भ

1. M.K.Gandhi, Hind Swaraj or Indian Home rule, Ahmedabad, Navjivan Publishing House, 1998.
2. Raghvan Lyer, The Moral and Political writings Mahatma Gandhi Oxford, clarendon Press, vol.11, 1987.
3. Gopinath Dhawan, The political philosophy of Mahatma Gandhi, Ahmedabadf, Navjivan Publication, 1948.

4. Bhikhup, Gandhi's political philosophy: A critical Examination
5. Young India, June 27,1939.
6. The Modern India Review , 1935.
7. रवीन्द्र कुमार इन्ट्रोडक्शन टू रूसेजइन गांधीयन पालिटिक्स : दी रॉलट सत्याग्रह ऑफ 1919 काक्साफोर्ड 1971.
8. श्याम मोहन, कानोमिक्स ऑपु अलटश्नेटिक्स खादी एण्ड विपेज इन्डस्ट्रीज इन बिहार, पटना 2000.
9. हरिजन, 19 दिसम्बर 1931, अहमदाबाद
10. यंग इण्डिया,10 जनवरी,1929, अहमदाबाद
11. वही, 17 जनवरी 1929
12. वही, 14 जनवरी 1929
13. सर्चलाइट, 11 दिसम्बर 1924
14. यंग इंडिया, 27 फरवरी 1927